क्या हो सकती हैं एक राजा की खूबियां

ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

आज हमारे देश में मंत्री हैं, सलाहकार हैं, प्रधानमंत्री हैं, लेकिन कोई भी राजा नहीं है। कारण आज प्रजातंत्र है, प्रजा का प्रजा पर राज्य क्योंकि सभी एक-दूसरे के बारे में वैसा नहीं सोच पाते जैसा एक राजा अपनी प्रजा के लिए सोचता है इसीलिए अलग-अलग राज्य से, अलग-अलग प्रतिनिधि चुन कर अपने-अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसको उसी हिसाब से दर्जा देते हैं क्योंकि उनको अपने स्टेट का विकास करना होता है और विकास के लिए वहाँ अपने आपको प्रूफ करना होता है। लेकिन मंत्री, प्रधानमंत्री या कोई भी ऐसा पद आज कभी खाली भी हो सकता है। आ-जा भी सकता है। तो अगर हम इसका कारण जानने की कोशिश करें, इसका कारण क्या हो सकता है, कैसे हम इससे अपने आप को बचा सकते हैं, या कैसे एक राजा की खूबी ला सकते हैं। तो कहा जाता है कि सभी अपने बारे में सोचते हैं।

राजाओं की राजाई क्यों चली गयी क्योंकि राजायें जब अपने ऊपर फोकस हो गये, अपने परिवार के ऊपर फोकस हो गये और अपनी प्रजा को छोड़ दिया उसके बाद राजाई जाने लगी। ऐसे ही आज मंत्री हो या कोई भी देश का नेता हो, हमेशा जब देश पर फोकस होगा तो उन्नति होगी। राजा वो है जो पूरी तरह से प्रजा के हित में सोचे, हर पल, हर क्षण सोचे, आपने पहले की कहानियां भी अच्छे से सुनी और पढ़ी होंगी कि एक राजा अपने प्रति क्या भावना है प्रजा में ये जानने के लिए अपने राज्य में वो खुद ही जाकर वेष बदलकर चक्कर लगाता था, और जाकर राज्य से पता करता था, उन्हीं की भाषा में पता करता था कि राजा के बारे में हमारी राज्य की प्रजा क्या सोचती है और उसके आधार से आके वो निर्णय लेता था। तो उसका राज्य बल्कि एक पुत्र की तरह था जैसे अपने पुत्र के बारे में सोचता, वैसे वो अपने राज्य के बारे में सोचता था। राज्य सर्वोपरि था। परिवार द्वितीय था उनके लिए।

हम सभी इस दुनिया में दो चीज़ों के भूखे हैं या कहें कि दो चीज़ हमको सबसे ज़्यादा चाहिए। सबसे पहला है सम्मान, सबको इज्जत बहुत अच्छी लगती है। और दूसरी चीज़ है उसको स्वतंत्र रहने का अधिकार है, बोलने का अधिकार, खाने का अधिकार, पीने का अधिकार, जीने का अधिकार चाहिए। ये हमारी सबसे बड़ी डिमांड है कि हमारा कोई अपमान न करे। इस दुनिया में एक छोटे व्यक्ति से लेकर एक बड़े व्यक्ति का जहाँ-जहाँ, जब-जब अपमान हुआ है पूरा राज्य खराब हुआ है, खत्म हुआ है। और इसके कितने सारे मिसाल हैं इस दुनिया में कि अगर किसी ने किसी की बेइज्जती करके, या उसका अपमान करके उसको बाहर निकाल दिया तो वो व्यक्ति शूल बनके, कांटा बनके उस पूरे राज्य को चुभ जाता है। और कुछ न कुछ ऐसा होता है जिससे पूरा राज्य नेस्तनाबूत(समूल नष्ट) हो जाता है। वैसे यहाँ भी हम सभी ज्ञानी हैं, समझदार हैं, और परमात्मा शिव निराकार हमसे राज्य की बात करते हैं कि हम सभी विश्व महाराजन बनें, पूरे विश्व को बांध कर रखें तो यहाँ भी वो चीज़ लागू होती है, सर्टीफिकेट की बात होती है कि सभी को स्वयं से संतुष्टि की बात है, परिवार से, समाज से, देश से तो ऐसे ही जो परमात्मा की संतुष्टि है वो ये है कि आपके अन्दर पूरे विश्व में जितनी भी आत्मायें हैं यदि उनके प्रति या किसी के प्रति भी दुर्भावना है, थोड़ा भी भावना में कमी है तो हम राजा कहाँ से बन पायेंगे!

मतलब सद्भावना सबके लिए रखना ये एक बहुत बड़ा चैलेंज है। बहुत बड़ा टास्क है। क्योंकि हो ही जाता है लोगों का ये मानना है। ऐसी मान्यता सही नहीं है, लेकिन उन लोगों का मानना है कि हो ही जाता है कि जहाँ के हम होते हैं वहाँ के प्रति भावना ज़्यादा है। इसका मतलब अभी भी हद की स्थिति है हमारी। सो राजा हद का नहीं बेहद का होता है। बेहद की सोच होती है, बेहद का संकल्प होता है सो परिवार हमारा राज्य है बेसिकली। आधारित है और आधार किस बात का है! मान पर आधारित है। हर कोई को आप सिर्फ सम्मान देकर देखिये,किसी भी तरह से उसकी इन्सल्ट न हो। चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बड़ा बच्चा है, चाहे कोई सेवाधारी है, चाहे कोई बड़े पद वाला है। आप समझो उसी दिन से आपके प्रति सबका व्यवहार, सबकी भावना बदल जायेगी। और वो व्यक्ति राजा ना होते हुए भी राजा है। हर कोई उसको बिना समझे, बिना जाने ऐसे ही सम्मान देगा। तो एक राजा को सभी प्रजा एक भगवान के रूप में पूजती है। भगवान के रूप में समझती है। और उसको पूरा विश्वास है होता है कि अगर मैं इनके पास जाऊंगा तो ये मेरी बात सुनेंगे।

तो हम सबको अपने आपको खुद ही खुद चेक करना चाहिए कि मेरे अन्दर जितने भी हमारे आस-पास के लोग हैं, जिनके साथ हम रहते हैं या जिनसे हम मिलते हैं या जिनसे हम नहीं भी मिलते उनके प्रति हमारी क्या भावनाएं हैं। क्या हमारे अन्दर कामनायें हैं, कैसी स्थिति है, उसके आधार से हम अपने आपको इस टाइटल से नवाज सकते हैं। नहीं तो आने वाले समय में वैसे तो सारी चीज़ें अपने आप स्पष्ट हैं फिर भी अपने से इस बात की चेकिंग करने से आपको बहुत कुछ मिल सकता है। क्योंकि समय और समय की गति दोनों चीज़ें अगर आप ध्यान से देखेंगे तो कुछ समय हम भले किसी न किसी कामना के वश, किसी के साथ अपमान या ऐसा व्यवहार हम कर सकते हैं लेकिन वो पद हमेशा तो नहीं रहेगा ना! लेकिन राजा हमेशा राजा है। कभी वो नॉर्मल स्थिति में या अब्नॉर्मल(असामान्य) स्थिति में नहीं आ सकता। तो ये एक बहुत सोचनीय विषय है कि मैं अपने आपको कहाँ तक देख पाता हूँ या कहाँ तक सोच पाता हूँ, या कहाँ तक रख पाता हूँ। उसी के आधार से मेरा जीवन अपनी इन्द्रियों पर भी कंट्रोल करने वाला होगा और दूसरों पर भी नैचुरल कंट्रोल, इसी को राजा जनक की स्थिति कह सकते हैं।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : मैं चण्डीगढ से राजेश हूँ। मैं एक पत्रकार हूँ। मेरा मन बहुत अशांत रहता है। मन उखड़ा-उखड़ा-सा रहता है। मेरा किसी भी कार्य में मन नहीं लगता। मैं क्या करूँ?

उत्तर : पत्रकारिता में भी और लोगों में भी कंपटीशन बहुत हो गया है। क्योंकि लोगों में क्योंकि स्पिरिचुअलिटी नहीं रही, निःस्वार्थ भाव नहीं रहा। एक मारा-मारी जैसा वातावरण रहता है। तो मनुष्य सोचता है कि क्या यही जीवन है! क्या इसी के लिए हमने एजुकेशन ली थी। जो चित्त का चैन भी खो दिया, नींद भी खो दी, अशांत और परेशान रहने लगे हैं। सभी मनुष्यों को मैं एक संदेश देना चाहूँगा कि सभी अपने पुण्य कर्मों को बढ़ाएं। ये पाप की ब्रेन पर छाया, पाप का ब्रेन पर दबाव, ये जो हमारी पॉज़िटिव चीज़ें थीं, जो ब्रेन की क्षमताएं थीं, जो हमारी सुख, शांति, खुशी थी उनको नष्ट कर रहा है। जब मनुष्य पाप करता है तो तब वो कुछ नहीं सोचता है। लेकिन जब उसका परिणाम सामने आता है तब उसका हाल बुरा हो जाता है। इसीलिए पुण्य को छोड़ें नहीं। हम किसी को दुःखी न करें, हम किसी को सताये नहीं। हो न हो ये आपके पास्ट कर्मों का ही फल है। क्योंकि ऐसा कोई कर्म नहीं जिसका फल न मिले। हो सकता है वर्तमान में आपका कोई भी कारण न हो, सबकुछ अच्छा हो लेकिन पास्ट का हमारे सबकॉन्शियस माइंड में भर जाता है। इसीलिए ये सब जो हो रहा है ये सब हमारे पास्ट कर्मों का ही फल है।

तो रोज़ आपको एक घंटा अपने लिए देना होगा। ताकि ब्रेन में जो निगेटिव एनर्जी भरी हुई है उसको आप समाप्त कर सकें। और अपना भविष्य सुंदर बना सकें। आप सबसे पहले तो ईश्वरीय ज्ञान लें। ताकि आपका चिंतन बदले। और सवेरे उठते ही आपको बहुत अच्छा अभ्यास करना है, जब भी आप आँख खोलें तो आपको दस मिनट अपने को चार्ज करना है। आपको संकल्प करना है कि मैं तो भगवान का बच्चा हूँ। मेरा परमपिता तो प्यार का सागर है। मैं भी प्यार से भरपूर हूँ। मेरा परमपिता तो शांति का सागर है मैं भी शांत स्वरूप हूँ। वो तो सर्वशक्तिवान है, उसने मुझे भी बहुत शक्तियां दी हैं। वो तो सुख दाता है, दुःख हर्ता है मेरा जीवन भी सुखों से भरपूर है। आज सारा दिन मैं भी सबको सुख दूंगा। ये जीवन तो सुन्दर यात्रा है। मेरे पास एक अच्छा काम है, अच्छा परिवार है, धन सम्पत्ति भी है। मेरे पास सबकुछ है, मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं। अपने अंतर्मन को बहुत खुशी से भर देना है। इस तरह के विचार आप सवेरे रोज़ करें, तीन बार कर लें। क्योंकि ये जो मन पर दबाव आ गया है, जो खुशी नष्ट हो गई है। वो सब समाप्त होता जायेगा। और आपका जीवन खुशियों से भर जायेगा।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं इंदौर से हूँ। जब से मेरी थर्ड बेबी हुई है मैं डिप्रेशन में हूँ। मेरी पहले दो बेटियां हैं, हमारे परिवार वालों ने कभी बेटे और बेटियों में भेद नहीं किया। मुझे लड़की हुई सब बहुत खुश हैं। लेकिन इसके जन्म के साथ ही मैं बहुत डिप्रेस्ड फील कर रही हूँ और साथ ही बीमार भी रहने लगी हूँ। मुझे इसका कारण समझ में नहीं आ रहा, मैं क्या करूँ?

उत्तर : ऐसे कई केसेज हमारे सामने आये हैं। जहाँ ऐसी फीलिंग होती है तो माँ के गर्भ के ही अन्दर कुछ दुःखों की, निगेटिव, डिप्रेशन की फीलिंग होने लगती है। देखिये कर्मों की फिलॉसफी के अनुसार इसके पीछे रहस्य यही है कि जो आत्मा आपके घर में आयी है आपका और बच्ची का कर्मों का बहुत कड़ा हिसाब-किताब है। निश्चित रूप से दोनों के बीच में पूर्व जन्मों में पुण्य कर्म नहीं रहे हैं। एक-दूसरे को बहुत कष्ट पहुंचाया है। वो आत्मा बदला लेने के लिए आपकी बच्ची बनकर आपके घर में आ गयी है। तो आप अभी अपने को सम्भालें और किसी तरह से डिप्रेशन को अपने अन्दर न आने दें। दो काम आपको विशेष रूप से करने हैं। जिसके करने से आपका डिप्रेशन पूर्ण समाप्त हो जायेगा और जो आत्मा आपके घर में आयी है उसका चित्त भी शांत हो जायेगा। बच्ची का और आपका दोनों का भविष्य सुन्दर हो जायेगा। पहला उस आत्मा से मन ही मन रोज़ सवेरे आप क्षमा-याचना करेंगी। हमने आपको पूर्व जन्मों में कोई भी कष्ट दिया है जिससे आपका चित्त अशांत हुआ है, हमने आपका दिल दुखाया है तो मैं आपसे सच्चे दिल से क्षमा-याचना करती हूँ। हमें क्षमा देंगे और शांत हो जाओ, सुखी हो जाओ, प्रसन्न हो जाओ, संतुष्ट हो जाओ। तुम अब हमारे घर में आ गई हो तो हम तुम्हें भरपूर प्यार देंगे। अब हम बिल्कुल सच्चे मित्र हैं। ये फीलिंग रोज़ 21 दिन तक आपको देनी है। और दूसरी बात आपको नींद नहीं आती, डिप्रेशन भी हो रहा है जो एक बुरी चीज़ है, आपके भविष्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। इसके लिए आप रोज़ रात को सोने से पहले 108 बार लिखेंगी कि मैं एक महान आत्मा हूँ, बिल्कुल गुड फीलिंग के साथ ये स्वीकार कर लें कि हम भगवान के बच्चे हैं। जैसे ही हम ये स्वीकार करते हैं कि हम भगवान के बच्चे हैं तो हम महान हो गये। ये बिल्कुल शांत में होकर रात को बैठकर लिखें। तो आपके ब्रेन को एक गुड एनर्जी जायेगी। आपका डिप्रेशन भी ठीक हो जायेगा। आपको नींद भी अच्छी आयेगी और आप अपनी बच्ची के लिए भी अपने कर्त्तव्य पूर्ण कर सकेंगी। उसे भरपूर प्यार दे सकेंगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल